P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-5* January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अलवर जिले में अनुसूचित जाति एवं जनजाति का वितरण

सारांश

इस शोध पत्र में अलवर जिले में वितरित अनुसूचित जाति एवं जनजाति के संकेन्द्रण का विश्लेषण किया गया है। हमारे देश की स्वतंत्रता के 71 वर्ष बाद भी अनुसूचित जाति एवं जनजाति विकास की मुख्य धारा मे शामिल नहीं हो सकी है। अभी भी इसकी अधिकांश जनसंख्या छुआछूत, अंधविश्वास, कम साक्षरता दर, गरीबी, बेरोजगारी आदि से ग्रसित है। इस शोध पत्र में तहसीलों के अनुसार अनुसूचित जाति एवं जनजाति के सकेन्द्रण एवं बिखराव का अध्ययन एवं विश्लेषण सांख्यिकी विधियों द्वारा किया गया है। तथा इसकी समस्याओं को दर्शाते हुए समाधान के उपाय सुझाये गये है।

मुख्य शब्द : अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, वितरण, स्थानीयकरण भाज्य।

राजेश प्रसाद पालीवाल
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

नरेन्द्र सिंह यादव
सह आचार्य,
भूगोल विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

देश के छः अनुसूचित जाति एवं जनजाति बाहुल्य वाले राज्यों में से राजस्थान एक मुख्य राज्य है। अध्ययन क्षेत्र में मुख्य रूप से दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग में अरावली पर्वतमाला का विस्तार है। उक्त क्षेत्र में मीणा जनजाती निवास करती है। इसके मुख्य रूप से दो वर्ग है– प्रथम–चौकीदार मीणा, दूसरा–जमीदार मीणा है। इनका मुख्य व्यावसाय कृषि, पशुपालन, संग्रहण है। अध्ययन क्षेत्र के उतरी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग (कठूमर तहसील) में अनुसूचित जाति का बाहुल्य है। इसके अर्न्तगत मुख्य रूप से खटीक, बैरवा, चमार, रैगर, मेघवाल, जाटव प्रमुखतया आते है। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि, पशुपालन, सफाई, निर्माण श्रमिक के रूप में कार्य करना मुख्य रूप से आते हैं। भारतीय संविधान में सभी अनुसूचित जातियों एवं जन जातियों का उल्लेख किया गया है। वर्ष 2011 में अलवर जिले की कुल जनसंख्या 3674179 है, जिसमें से अनुसूचित जाति 653036 है तथा अनुसूचित जनजाति 289249 है। जो जिले की कुल जनसंख्या का क्रमशः 17.77 प्रतिशत तथा 7.87 प्रतिशत भाग है।

अध्ययन क्षेत्र

भारत देश में राजस्थान राज्य के अर्न्तगत अलवर जिला स्थित हे। यह राजस्थान के उत्तरी पूर्वी भाग में स्थित है। अलवर की लम्बाई उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा में 137 किलोमीटर तथा चौड़ाई पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा में 110 किमी. है। यह $27^0 03'$ से $28^0 4'$ उत्तरी अक्षांश एवं $76^0 07'$ से $77^0 13'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 8382 वर्ग किलोमीटर है। इसकी कुल जनसंख्या 3674179 है। जिसमें से अनुसूचित जाति 653036 तथा अनुसूचित जनजाति 289249 है। जो कुल जनसंख्या का क्रमशः 17.77 प्रतिशत तथा 7.87 प्रतिशत ह। प्रशासनिक दृष्टिकोण से अलवर जिला बारह तहसीलों अलवर, बहरोड़, बानसुर, किशनगढ़बास, कोटकासिम, कठूमर, मुण्डावर, लक्ष्मणगढ़, राजगढ़, रामगढ़, तिजारा एवं थानागाजी तहसीलें है। 6 नगरपालिका, 1 जिलापरिषद, 14 पंचायत समितियां, 472 ग्राम पंचायते एवं 517 पटवार मण्डल तथा 2081 ग्राम स्थित है।

अलवर जिले को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में शामिल कर लिया गया है, जिससे इसके विकास की संभावनाएं बढ़ गई है।

शोध के उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के भौगोलिक वितरण एवं सकेन्द्रण तथा बिखराव को दर्शाना।
2. अनुसूचित जाति एवं जनजाति की समस्याओं को इंगित करना।
3. अनुसूचित जाति एवं जनजाति की समस्याओं के सन्दर्भ में सुझाव देना।

साहित्यावलोकन

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-5* January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

डॉ. आर.एन. मिश्रा (2002) ट्राईबल लाइफ एण्ड हैवीटाट में बांसवाडा जिले में निवास करने वाली आदिवासी जनजाति भील के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की विभिन्नताओं का अध्ययन किया।

मानसिंह (2004) ने माही बजाज सागर परियोजना से जनजातियों एवं पर्यावरण पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन किया।

पल्लवी सिंह एवं शशिकांत (2015) ने शोध पत्र Demographic Stracture of Sc And St Population- A Casestudy of Jaipur District में जयपुर जिले के SC/ST जनसंख्या का भौगोलिक वितरण के बारे में बताया। यह शोधक पत्र IJSETR पत्रिका के जनवरी 2015 के अंक में प्रकाशित हुआ।

डॉ. चादना आर.सी. (2005) जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली

डॉ. शर्मा पी.एम. (2009) भूगोल में सांख्यिकी विधियां, राजस्थान हिन्दी अकादमी जयपुर

Indira Munshi (2018) The Adivasi Question, Orient Blackswan Private Limited, Hyderabad.

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार खटीक (2018) ने प्रतापगढ जिले में सामाजिक आर्थिक विकास का प्रादेशीकरण कर इस आदिवासी क्षेत्र का अध्ययन किया।

परिकल्पना

अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी दिशा में अनुसूचित जाति का संकेन्द्रण है, जबकि अनुसूचित जनजाति का बिखराव है। तथा अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी भाग में अनुसूचित जनजाति का संकेन्द्रण है, जबकि अनुसूचित जाति का बिखराव है।

शोध प्रविधि

विषय वस्तु की जानकारी हेतु सर्वप्रथम अनुसूचित जाति एवं जनजाति से सम्बंधित प्रकाशित एवं अप्रकाशित विभिन्न शोध प्रबंध, शोध पत्रों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया। वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर सभी तहसीलों में अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या का सकेन्द्रण सांख्यिकी विधि स्थानीयकरण भाज्य (Location Quotient या L.Q) द्वारा किया गया। इसमें निम्न सूत्र का प्रयोग किया गयाः–

$$LQi \quad \frac{Pij \ / \ Pi}{Pj \ / \ p}$$

यहाँ सूत्र में–

LQi = i क्षेत्र में स्थानीयकरण भाज्य
Pij = i क्षेत्र में j श्रेणी के अर्न्तगत जनसंख्या
Pi = i क्षेत्र में सभी श्रेणी की जनसंख्या
Pj = सम्पूर्ण क्षेत्र में j श्रेणी के अर्न्तगत जनसंख्या
P = सम्पूर्ण क्षेत्र में सभी श्रेणियों की जनसंख्या

उपर्यक्त 'स्थानीयकरण भाज्य' का अधिक मान सकेन्द्रण को तथा कम मान बिखराव को प्रदर्शित करता है।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति का वितरणः– वर्ष 2011 में जिले में कुल जनसख्या 3674179 है, जिसमें से अनुसूचित जाति 653036 है, जो कुल जनसंख्या का 17. 77 प्रतिशत है। इस अनुसूचित जाति में पुरूष 342938 तथा महिलाएं 310098 है। तहसील स्तर पर अनुसूचित जाति के अर्न्तगत बहरोड में कुल जनसंख्या के 15.07 प्रतिशत, मुण्डावर में 20.16 प्रतिशत, किशनगढ़बास में 20. 73 प्रतिशत, तिजारा में 12.55 प्रतिशत, बानसुर में 14.77 प्रतिशत, अलवर में 19.66 प्रतिशत, रामगढ़ में 16.39 प्रतिशत, थानागाजी में 14.05 प्रतिशत, राजगढ़ में 18.96 प्रतिशत, लक्ष्मणगढ़ में 18.02 प्रतिशत तथा कोटकासिम में 20.02 प्रतिशत व कठुमर में कुल जनसंख्या के 24.30 प्रतिशत अनुसूचित जाति की जनसंख्या निवास करती है। अनुसूचित जनजाति के अर्न्तगत अध्ययन क्षेत्र में मीणा जनजाति निवास करती है। वर्ष 2011 में कुल अनुसूचित जनजाति 289249 है, जो जिले की कुल जनसंख्या का 7. 87 प्रतिशत है। इस अनुसूचित जनजातियों में पुरूष 153397 तथा महिलाएं 135852 है। तहसील स्तर पर बहरोड़ की कुल जनसंख्या का 2.41 प्रतिशत, मुण्डावर में 2.92 प्रतिशत, किशनगढबास में 0.27 प्रतिशत, तिजारा में 0.28 प्रतिशत, बानसुर में 4.57 प्रतिशत, अलवर में 4.95 प्रतिशत, रामगढ़ में 3.16 प्रतिशत, थानागाजी में 19.13 प्रतिशत, राजगढ़ में 30.82 प्रतिशत, लक्ष्मणगढ़ में 11.83 प्रतिशत, कोटकासिम में 0.69 प्रतिशत, कठूमर में कुल जनसंख्या के 11.83 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति निवास करती है। तालिका सं. 01 में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या एवं स्थानीयकरण भाज्य को दर्शाया गया है।

तालिका सं. 01

क्र.सं.	तहसील	कुल जनसंख्या	SC कुल जनसंख्या	ST कुल जनसंख्या	SC जनसंख्या (प्रतिशत)	ST जनसंख्या (प्रतिशत)	स्थानीयकरण भाज्य (L.Q) S.C जनसंख्या	स्थानीयकरण भाज्य (LQ) S.T जनसंख्या
1.	बहरोड़	359248	54152	8663	15.07	2.41	0.84	0.30
2.	मुण्डावर	231628	46697	6768	20.16	2.92	1.13	0.37
3.	किशनगढ़बास	201279	41761	548	20.73	0.27	1.16	0.03
4.	तिजारा	396575	49755	1104	12.55	0.28	0.70	0.035

5.	बानसुर	263663	38940	12059	14.77	4.57	0.83	0.58
6.	अलवर	703856	140523	34812	19.96	4.95	1.12	0.62
7.	रामगढ़	256605	42051	8106	16.39	3.16	0.92	0.40
8.	थानागाजी	233395	32801	44642	14.05	19.13	0.79	2.43
9.	राजगढ़	356727	67276	79926	18.86	30.82	1.06	3.91
10.	लक्ष्मणगढ़	288671	52032	32657	18.02	11.31	1.01	1.43
11.	कोटकासिम	137339	27494	953	20.02	0.69	1.12	0.08
12.	कठूमर	245193	59581	29011	24.30	11.83	1.36	1.50
अलवर जिला (कुल योग)		**3674179**	**653036**	**289249**	**17.77**	**7.87**		

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पुस्तिका–2011

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिक स्थानीयकरण भाज्य से सकेन्द्रण तथा स्थानीयकरण भाज्य का मान कम होने पर यह बिखराव को दर्शाता है। प्रस्तुत अध्ययन में अनुसूचित जाति का सर्वाधिक सकेन्द्रण कठुमर (1.36), किशनगढ़बास (1.16), मुण्डावर (1.13), अलवर (1.12) तथा कोटकासिम में (1.12) है। जबकि अनुसूचित जाति का सर्वाधिक बिखराव तिजारा (0.70) तथा थानागाजी में (0.79) है। आरेख सं. 01 में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के कुल जनसंख्या के प्रतिशत को दिखाया गया है।

आरेख सं. 01

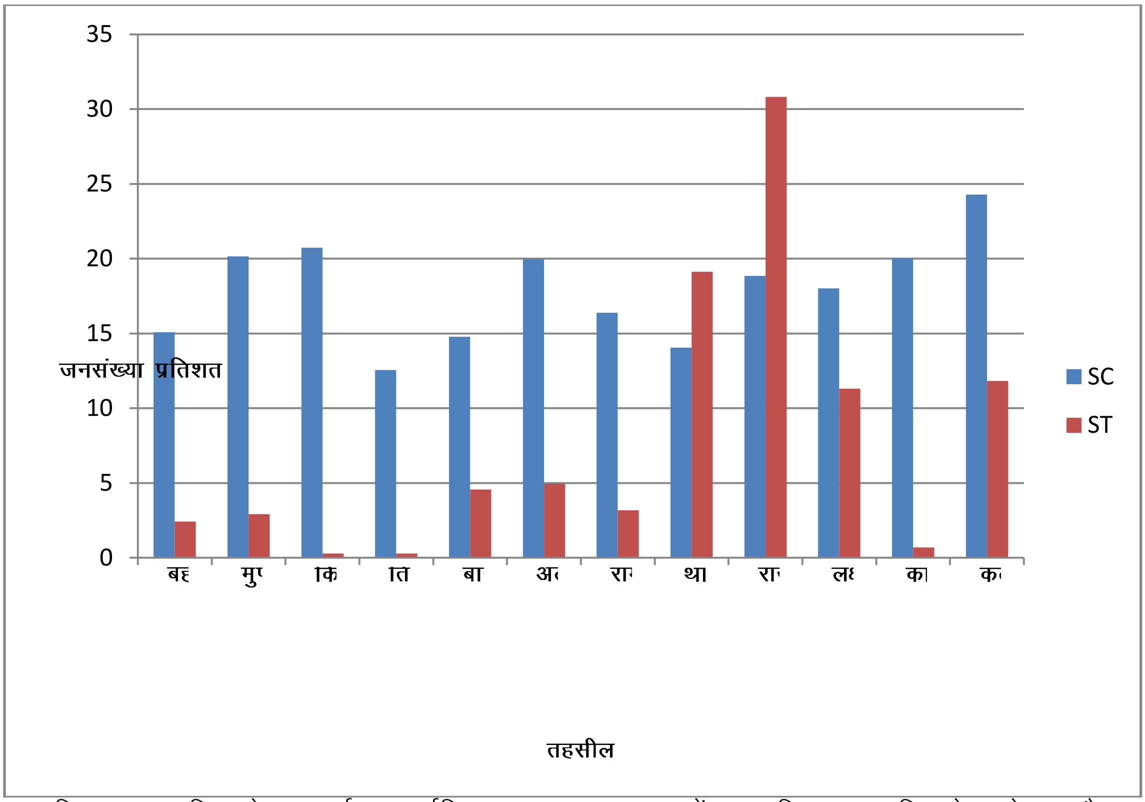

अनुसूचित जनजाति के अन्तर्गत सर्वाधिक सकेन्द्रण राजगढ़ (3.91) थानागाजी (2.43), कठूमर (1.50), तथा लक्ष्मणगढ़ में (1.43) है। तथा सर्वाधिक बिखराव किशनगढ़ (0.03) तथा तिजारा (0.035) है।

परिकल्पना परीक्षण एवं निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में मुण्डावर, किशनगढ़बास में अनुसूचित जाति का सकेन्द्रण है तथा अनुसूचित जनजाति का बिखराव है। जबकि दखिणी भाग में थानागाजी राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ में अनुसूचित जनजाति को सकेन्द्रण है तथा अनुसूचित जाति का बिखराव है।

समस्याएं

1. जातिवाद की समस्या।
2. मंदिरों में प्रवेश सम्बंधी समस्या।
3. साक्षरता दर का अति निम्न होना।
4. जागरूकता का अभाव।
5. गरीबी की समस्या।
6. बेरोजगारी की समस्या।

7. कुपोषण की समस्या।
8. भूखमरी की समस्या।

सुझाव

1. अस्पृश्यता कानुन को कठोर किया जाना चाहिए।
2. अछूतो को भी मंदिरों में प्रवेश दिया जाना चाहिए।
3. साक्षरता बढाने हेतु विशेष अभियान चलाये जाने चाहिए।
4. विभिन्न सरकारी कार्यक्रम विशेष रूप से अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए चलाए जाने चाहिए, जिससे गरीबी व बेरोजगारी की समस्या दूर हो।
5. सार्वजनिक वितरण प्रणाली में न्यूनतम दर पर खाद्यान्न उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

चादना आर.सी. (2005) जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली

जिला सांख्यिकी रूप रेखा– 2011

अग्रवाल एस.एन. 'India's Population Problem' Tata Mc Graw Hill New Delhi

शर्मा पी.एम. (2009) भूगोल में सांख्यिकी विधियां राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर

General theory of population, by alfred sauvy

Satish deshpande (2018) The Problem of Caste, Orient Blackswan, Private Ltd., Hyderabad.

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार खटीक (2018) प्रतापगढ़ जिले में सामाजिक एवं आर्थिक विकास, पीएच.डी. थीसीस राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।